11147CH13

13

देखभाल तथा शिक्षा

उद्देश्य

इस अध्याय को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी निम्नलिखित के योग्य हो सकेंगे –

- विकास के दृष्टिकोण से शैशवावस्था तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधियों का महत्त्व बताने में,
- 'देखभाल' तथा 'शिक्षा' प्रदान करने की आवश्यकता तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं मध्य बाल्यावस्था के संदर्भ में इन शब्दों के अर्थ को स्पष्ट कर पाएँगे,
- प्रारंभिक बाल्यावस्था तथा मध्य बाल्यावस्था के वर्षों में शिक्षा के स्वरूप की चर्चा करने और
- प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण में बाधक कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे।

13.1 परिचय

सभी सजीव प्रजातियाँ अपने छोटे बच्चों की देखभाल करती हैं। किंतु क्या आप जानते हैं कि मानव शिशु सबसे दीर्घ अवधि तक वयस्कों पर निर्भर रहता है? वयस्क देखभाल पर निर्भरता की अवधि तथा मस्तिष्क के आकार एवं जटिलता के बीच एक सहसंबंध है। मानव मस्तिष्क सबसे अधिक जटिल होता है तथा यह जैविक विकास के क्षेत्र के सर्वोच्च छोर का प्रतिनिधि है।

इस भाग में हम यह अध्ययन करेंगे कि बाल्यावस्था के वर्षों में देखभाल तथा शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है। हम इस बात पर भी विचार करेंगे कि ''देखभाल'' तथा 'शिक्षा' से क्या तात्पर्य है? आप जानते ही हैं कि बाल्यावस्था की अवधि को शैशवास्था (जन्म से 2 वर्ष), ''प्रारंभिक बाल्यावस्था के (2-6) वर्ष तथा मध्य बाल्यावस्था के (7-11) वर्षों'' में विभाजित किया गया है। इस भाग में चर्चा के उद्देश्य से हम शैशवावस्था तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधि पर एक साथ विचार करेंगे। मध्य बाल्यावस्था के वर्षों में देखभाल तथा शिक्षा पर अलग से चर्चा की गई है।

© NCERT not to be republished

13.2 शैशवावस्था तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्ष

प्रथम छह वर्षों का महत्त्व

विश्व भर से प्राप्त अनुसंधान प्रमाण के आधार पर, अब हम जानते हैं कि शैशवावस्था तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधियाँ कई तरह से किसी भी व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा निर्णायक होती हैं। क्या आप आगे पढ़ने से पहले यह बताना चाहेंगे कि ऐसा क्यों हैं? अपनी टिप्पणियाँ बाक्स में लिखें तथा आगे की गई चर्चा के साथ उनकी तुलना करें।

आपकी टिप्पणियों के लिए बॉक्स

प्रथम, सभी क्षेत्रों में विकास की दर इन वर्षों में सर्वाधिक तीव्र होती है।

विकास के उन विभिन्न क्षेत्रों की सूची बनाएँ जिनके विषय में आप पहले पढ़ चुके हैं।

आप जानते हैं कि मस्तिष्क सभी क्षेत्रों में विकास को नियंत्रित करता है तथा मस्तिष्क के विकास की दर जीवन के प्रथम दो वर्षों में सर्वाधिक तीव्र होती है। मस्तिष्क के विकास से संबंधित अनुसंधान दर्शाता है कि यद्यपि जन्म के समय हमारे मस्तिष्क में वे सब कोशिकाएँ होती हैं जो प्रायः हमारे मस्तिष्क में पहले से होती हैं, इन मस्तिष्क कोशिकाओं में अंतर्ग्रथनी संयोजन (Synaptic Connection) प्रथम दो वर्षों के दौरान अत्यधिक तीव्रता से विकसित होता है। अनुसंधान में यह पाया गया है कि ये संयोजन जितने अधिक होंगे, व्यक्ति की कार्यात्मक क्षमता उतनी ही बेहतर होगी। मस्तिष्क के विकास की तीव्र दर के कारण जीवन के प्रथम छह वर्ष विकास के विभिन्न क्षेत्रों के लिए निर्णायक होते हैं। ''निर्णायक'' अवधि से हमारा तात्पर्य ऐसी अवधि से है जिसके दौरान किसी विशिष्ट क्षेत्र में विकास अनुकूल तथा प्रतिकूल अनुभवों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होता है। प्रतिकूल अनुभव जैसे पर्याप्त भोजन का अभाव, रहन-सहन की खराब स्थितियाँ, उचित स्वास्थ्य देखभाल का अभाव, बीमारी, स्नेह तथा पालन-पोषण का अभाव, वयस्कों के साथ बातचीत का अभाव तथा प्रेरणादायी अनुभवों का अभाव काफ़ी सीमा तक विकास में बाधा डाल सकते हैं।

दूसरी ओर, अनुकूल अनुभव विकास को प्रेरित तथा संवर्धित कर सकते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि अनुकूल अनुभवों से हमारा क्या तात्पर्य है? एक ऐसा माहौल जिसमें बच्चे को अनुकूल

© NCERT not to be republished

अनुभव मिलते हैं, उसे प्रेरणादायक इष्टतम अथवा समृद्धकारी माहौल भी कहा जाता है जबकि ऐसा माहौल जिसमें बच्चे को प्रतिकूल अनुभव प्राप्त होते हैं, वंचित माहौल अथवा ऐसा माहौल कहलाता है जिससे कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, इस निर्णायक अवधि के दौरान प्रतिकूल अनुभवों का प्रभाव कभी-कभी अपरिवर्तनीय हो जाता है। दूसरे शब्दों में, बच्चे के विकास को हुई क्षति की क्षतिपूर्ति नहीं की जा सकती भले ही बाद में सकारात्मक अनुभव प्राप्त हों। वंचन के प्रति इस संवदेनशीलता के कारण यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे को हानिकारक अनुभवों का सामना कम-से-कम करना पड़े। अत: प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों को विकास की निर्णायक अवधियाँ कहा गया है। चित्र-1 में मस्तिष्क की कोशिकाओं के बीच अंतर्ग्रथनी संयोजनों के विकास को संवर्धनकारी और अभावपूर्ण दोनों प्रकार के माहौल की स्थितियों में दर्शाया गया है। चित्र-2 में मस्तिष्क विकास तथा उसके कार्य के कुछ पहलुओं की निर्णायक अवधियाँ दर्शाई गई हैं। उदाहरणार्थ, चित्र से यह स्पष्ट है कि हालाँकि द्विनेत्री दृष्टि, भावनात्मक नियंत्रण तथा भाषा का विकास पाँच वर्ष की आयु तक जारी रहता है, तथापि निर्णायक अवधि जन्म से लेकर दो वर्ष की आयु के बीच की होती है।

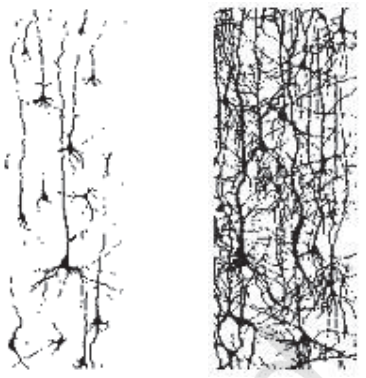

चित्र 1– मस्तिष्क कोशिकाओं के बीच अंतर्ग्रथनी संयोजनों का विकास (Source: http://www.brainwave.org.nz/stages-of-brain-Development-from-before-birth-to-18/)

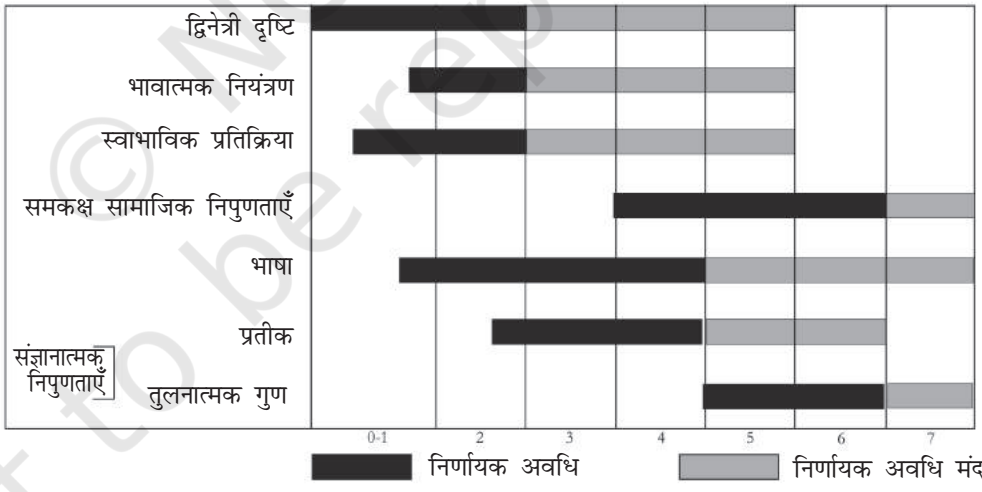

(स्रोत — रीचिंग आउट टू दि चाइल्ड, एचडीएस वर्ल्ड बैंक, 2004)

यद्यपि विकास तथा शिक्षा जीवनपर्यंत चलते रहते हैं, लेकिन कोई भी व्यक्ति इन विविध सक्षमताओं, कौशलों तथा योग्यताओं को इतनी अल्पावधि में हासिल नहीं कर सकता जितना वह जीवन के प्रथम छह वर्षों के दौरान कर लेता है। यह कितना सही है यह जानने के लिए आपको केवल उस नवजात शिशु के बारे में सोचना है जो जीवित रहने के लिए वयस्क व्यक्तियों पर निर्भर होता है और बाद में अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने, अन्य लोगों के साथ संप्रेषण करने तथा संबंध बढ़ाने में सक्षम, सक्रिय तथा जिज्ञासु छह वर्षीय बालक बन जाता है।

© NCERT not to be republished

इस अवधि के दौरान, बच्चा अनेक ऐसी सक्षमताएँ भी हासिल कर लेता है जो, यदि अर्जित नहीं की गईं तो इस अवधि के बाद अर्जित नहीं की जा सकती, अथवा यदि हासिल किया भी गया तो उन्हें अर्जित करने में अत्यधिक कठिनाई आती है।

दूसरे, हालाँकि प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्ष विकास की संवेदनशील अवधियाँ हैं जिनमें हानिकारक अनुभवों का स्थायी प्रभाव पड़ सकता है, फिर भी ये समय विशाल लचीलेपन का समय होता है। इन वर्षों में बच्चा स्थिति से सामंजस्य बैठाने की अच्छी योग्यता प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार, यदि बच्चे को आरंभिक वर्षों में प्रतिकूल अनुभव प्राप्त हुए हों तथा बाद में उसे अनुकूल अनुभव मिले हों तो वह थोड़ा-बहुत, नकारात्मक अनुभवों से उबर सकता है, यद्यपि इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है। आइए इसे समझने के लिए हम बोलना सीखने का उदाहरण लें। सामान्यत: बच्चा अपना पहला शब्द लगभग प्रथम जन्मदिवस अर्थात एक वर्ष की आयु के आस-पास बोलता है, किंतु क्या इसका अर्थ यह है कि भाषायी विकास एक वर्ष की आयु से आरंभ होता है? नहीं, भाषा का विकास बच्चे के जन्म के समय से ही आरंभ हो जाता है जब बच्चा दूसरों को बोलते हुए सुनता है तथा उन सभी ध्वनियों को समझने का प्रयास करता है जिन्हें वह सुनता है। लगभग नौ माह की आयु के आस-पास बच्चा ध्वनियों का बार-बार प्रयोग करने लगता है जिसे बालालाप (बबलाना) कहते हैं। आपने अक्सर शिशुओं को बाबाबा, मामामा की ध्वनियाँ निकालते हुए सुना होगा। इसे बबलाना कहते हैं और इसके पश्चात् ही शिशु पहला शब्द बोल पाता है। यह देखा गया है कि जो बच्चे सुन नहीं सकते वे ठीक से सुन-पाने वाले बच्चों की आयु में ही बबलाना शुरू कर देते हैं लेकिन जो बच्चे सुन नहीं सकते उनकी बबलाने की मात्रा घट जाती है और बोलने की प्रक्रिया में विलम्ब हो जाता है। ऐसा इसलिए है कि वे बच्चे बोली जा रही भाषा को—चाहे वह उनका बबलाना हो अथवा दूसरे की बातें, नहीं सुन सकते हैं। यदि श्रवण शक्ति के अभाव का पता नहीं लगता और बच्चे को श्रवण साधन उपलब्ध नहीं कराया जाता तो बच्चा, बोलना नहीं सीख पाएगा। यदि श्रवण साधन बाद में उपलब्ध कराए जाते हैं तो बच्चे को बोलना सिखाने में कहीं अधिक प्रयास की आवश्यकता होगी। इस प्रकार, भाषा ध्वनियों की प्रतिपुष्टि प्राप्त न होना यह दर्शाता है कि बच्चों के बोलने के विकास में यह अनुभव कितना निर्णायक है।

तीसरे, जीवन के कुछ वर्षों के अनुभव काफ़ी हद तक बाद के व्यवहार को प्रभावित और निश्चित रूप प्रदान करते हैं। हमारी कई अभिवृत्तियों, सोचने के तरीकों तथा व्यवहार को जीवन के आरंभिक वर्षों के दौरान हुए अनुभवों के साथ जोड़ा जा सकता है।

देखभाल तथा शिक्षा का अर्थ

जब आप 6 वर्ष की आयु से कम आयु के बच्चे की देखभाल तथा शिक्षा के बारे में सोचते हैं तो आपके मस्तिष्क में कौन-से क्रियाकलाप आते हैं। आगे पढ़ने से पहले नीचे दिए गए बॉक्स में अपनी टिप्पणियाँ लिखें।

आपकी टिप्पणी के लिए बॉक्स

© NCERT not to be republished

शिक्षा से आपका क्या अभिप्राय है? विशिष्ट रूप से शिक्षा का अर्थ हम स्कूल में पढ़ना मानते हैं। परंतु क्या इसका यह अर्थ है कि जब हम विद्यालय या कॉलेज जाना बंद कर देते हैं तो हम शिक्षा प्राप्त करना बंद कर देते हैं या जब तक बच्चा केवल शिक्षण विद्यालय में पढ़ने नहीं जाता तब तक कोई भी शिक्षा प्राप्त नहीं करता? ऐसा नहीं है। शिक्षा केवल शिक्षण संस्थानों में औपचारिक पढ़ाई करना ही नहीं है बल्कि यह घर में बच्चे के प्रारंभिक वर्षों से ही शुरू हो जाती है तथा जीवनपर्यंत जारी रहती है। यह सच है कि हम जब विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचते हैं, तब उस समय हमारी शिक्षा का प्रकार और स्थान बदल जाता है। निम्नलिखित भाग में हमने बच्चे की तीन आधारभूत आवश्यकताओं के संदर्भ में देखभाल और शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट किया है, जो इष्टतम विकास के लिए पूरी करनी चाहिए। इन पर नीचे दिए गए खंड में विचार किया गया है–

(i) **शारीरिक देखभाल की आवश्यकता** – शारीरिक देखभाल की आवश्यकता के बारे में हम सभी जानते हैं। शिशु तथा पूर्व विद्यालय छात्र को जीवित रहने के लिए वृद्धि तथा विकास के लिए सुरक्षा, भोजन तथा स्वास्थ्य संबंधी देखभाल की आवश्यकता होती है – विकास के लिए सबसे पहले ये आवश्यक हैं। बालक की उद्दीपन तथा पालन-पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जब बच्चे में कोई अक्षमता होती है – जैसे बच्चा देख या सुन नहीं पाता अथवा चलने में असमर्थ होता है अथवा उसकी संज्ञानात्मक कार्यक्षमता उसकी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में कम होती है तब बच्चे की असमर्थता को ध्यान में रखते हुए उसकी देखभाल तथा प्रोत्साहन की आवश्यकताओं को पूरा किया जाना चाहिए। इस प्रकार, किसी भी बच्चे को प्रदान की जाने वाली आवश्यक शारीरिक देखभाल के अतिरिक्त परिवार की उन आवश्यकताओं को भी पूरा करना होगा जो उसकी अक्षमता के कारण उत्पन्न विशिष्ट स्थितियों से पैदा होती हैं। उदाहरण के तौर पर, अधिकांश सामान्य दृष्टि वाले व्यक्ति वस्तुओं तथा लोगों को देख कर उनके बारे में जान लेते हैं और यह सब इतने सहज रूप से होता है कि हमें इसका पता भी नहीं चलता। किंतु जब बच्चे को देखने में कठिनाई हो तो परिवार के सदस्यों को उसे स्पर्श करने, सुनने, सूँघने तथा स्वाद की संवेदना का प्रयोग करके बच्चे को सिखाने में सहायता करने की आवश्यकता होगी। इस प्रकार प्रोत्साहन के लिए बच्चे की आवश्यकता की पूर्ति उसकी देखने की अक्षमता से प्रभावित होती है। आइए इन आवश्यकताओं को विस्तार से समझें।

(ii) **प्रोत्साहन की आवश्यकता** – बच्चे अपने जीवन के आरंभिक दिनों से ही जिज्ञासु होते हैं तथा वे अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के साथ परस्पर क्रिया करने तथा उनका आशय जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। उन्हें वस्तुओं की खोजबीन करने तथा उनका पता लगाने में मज़ा आता है। यह उनका सीखने का तरीका है तथा जीवन की किसी भी अवस्था में अन्वेषण (खोज-बीन) के प्रति उत्कंठा इतनी तीव्र नहीं होती जितनी आरंभिक वर्षों में होती है। जब हम शिशु के साथ खेलते हैं, गाते हैं तथा उसके साथ बातचीत करते हैं तो हम उसे सोचने, तर्क करने तथा अपने आस-पास के संसार को समझने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार प्रेरणा (प्रोत्साहन) का अर्थ बच्चे को ऐसे विविध अनुभव उपलब्ध कराना है जो उसके लिए सार्थक हैं तथा उसकी परिपक्वता की स्थिति के अनुरूप

© NCERT not to be republished

हैं। ऐसे अनुभवों के माध्यम से बच्चे अपने आस-पास की वस्तुओं तथा लोगों के बारे में सीखते हैं तथा अनुभवों का अर्थ समझते हैं। इस प्रकार, वस्तुओं के सक्रिय अन्वेषण तथा अपने आस-पास की घटनाओं में सक्रिय सहभागिता द्वारा, बच्चे विश्व के बारे में जानकारी ग्रहण करते हैं तथा अपनी समझ निर्मित करते हैं। अपने लिए वस्तुओं का अन्वेषण करना तथा उनकी खोज करना इष्टतम संज्ञानात्मक विकास के लिए एक पूर्वापेक्षा है। यहाँ 'निर्मित करने' का अर्थ है कि बच्चे सक्रिय सहभागिता द्वारा खुद की समझ सृजित करते हैं, समझ कोई ऐसी चीज नहीं है जो बच्चों को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा सिखाई जा सके जब वह निश्चेष्ट हों। बच्चों को जो अर्थ पूर्ण लगता है उसमें उनके एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचने पर नि:संदेह परिवर्तन आएँगे। इसके साथ-साथ, बच्चों के द्वारा अनुभवों को समझ पाने में तथा विकास के वर्तमान स्तर के अनुसार नये तथा चुनौतीपूर्ण अनुभवों से परिचित होने के लिए वयस्क लोगों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

क्रियाकलाप 1

उपर्युक्त अनुच्छेद में हम ने कुछ संकल्पनाओं से परिचित कराया है तथा कुछ शब्दों का प्रयोग किया है जिन्हें आप पूर्णतया तभी समझ पाएँगे जब आप स्वयं बच्चों का अवलोकन करेंगे। इसलिए, क्रियाकलाप 1 के भाग के रूप में आप तीन ऐसे कार्य करें ताकि आप उन संकल्पनाओं को समझ सकें जिनके बारे में आप पढ़ रहे हैं।

(क) जैसा कि पहले कहा गया है बच्चे अन्वेषण करने तथा खोजबीन करने में आनंद का अनुभव करते हैं और इस तरह से वे वस्तुओं के बारे में सीखते हैं। एक वर्ष से छह वर्ष की आयु के किसी बच्चे का अवलोकन करें जो अपनी रुचि के किसी क्रियाकलाप में संलग्न हो। आपके विचार से बच्चा इस क्रियाकलाप से क्या सीख रहा है? इस क्रियाकलाप के माध्यम से विकास के किस क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है? कक्षा में अध्यापक तथा अन्य विद्यार्थियों के साथ अपने प्रेक्षणों तथा निष्कर्षों पर चर्चा करें।

(ख) अपने-अपने क्रियाकलाप में संलग्न दो बालकों का अवलोकन करें जिनमें से एक 2 वर्ष की आयु तथा दूसरा 5 वर्ष की आयु का हो। क्या आपको लगता है कि उन्हें वह क्रियाकलाप अर्थपूर्ण लगता है? क्या दोनों क्रियाकलापों में उनकी कठिनाई के स्तर या जटिलता के संदर्भ में कोई अंतर था? क्या आपको लगता है कि दो वर्ष के बच्चे को 5 वर्षीय बच्चे द्वारा किए गए क्रियाकलाप तथा पाँच वर्षीय बच्चे को दो वर्षीय बच्चे के क्रियाकलाप को करने में आनंद आएगा? क्या उसे वह क्रियाकलाप अर्थपूर्ण लगता? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?

(ग) एक 6 वर्षीय बच्चे का अवलोकन करें जो किसी वयस्क व्यक्ति-पिता, माता या किसी अन्य वयस्क के साथ किसी क्रियाकलाप में संलग्न हो। उस क्रियाकलाप का वर्णन करें जिसमें बच्चा संलग्न था तथा स्पष्ट करें कि वयस्क व्यक्ति ने बच्चे के अनुभवों को समझने तथा उसे नये अनुभवों की जानकारी देने में उसकी सहायता किस प्रकार की।

© NCERT not to be republished

(iii) **पालन-पोषण की आवश्यकता** – स्नेह तथा पालन-पोषण समस्त विकास का आधार है। विकास बच्चे का खाना खिलाने, उसकी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखने तथा उसे प्रोत्साहित करने तथा सीखने के अनुभव प्रदान करने की मशीनी क्रिया का परिणाम नहीं है। यदि बच्चे की स्नेह और ममता की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती, यदि बच्चा अपने आस-पास के वयस्क व्यक्तियों के साथ विश्वासपूर्व तथा स्नेहमयी संबंधों का विकास नहीं कर पाता तो वह भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस नहीं करेगा, और ऐसे बच्चे में आत्मविश्वास की तथा आत्मसम्मान की कमी हो सकती है जिससे सभी क्षेत्रों में उसका विकास बाधित हो सकता है। आपने 'स्वयं' संबंधी अध्याय में पढ़ा है कि जब शिशु के जीवन के प्रथम वर्ष में देखभाल तथा ममता में सामंजस्य होता है तो उसमें विश्वास की भावना का विकास होता है। यह देखा गया है कि जब बच्चा सुरक्षित महसूस करता है तथा अपने देखभालकर्ताओं के साथ उसका विश्वासपूर्ण संबंध होता है तो वह अपेक्षाकृत अधिक अन्वेषण करता है और इसी के फलस्वरूप अधिक सीखता है। जब बच्चे में सुरक्षा की भावना नहीं होती तो वह नयी स्थितियों के प्रति आशंकित रहता है तथा अन्वेषण करने का इच्छुक नहीं होता है तथा अपनी देखभाल करने वालों के साथ बहुत ज़्यादा चिपका रहता है। यह बच्चे के सीखने की क्रिया में बाधक होता है। इसी प्रकार, बच्चे में स्वायत्तता, पहल करना और परिश्रम की भावनाओं को विकसित करना आवश्यक है। जैसा कि 'स्वयं' अध्याय में स्पष्ट किया गया है, प्रारंभिक तथा मध्य बाल्यावस्था के वर्षों में, एक सकारात्मक आत्म-संकल्पना के विकास के लिए ये आवश्यक हैं।

क्रियाकलाप 2

हम अक्सर सीखने में भावनाओं की भूमिका को कम महत्त्व देते हैं। अपने अनुभवों पर विचार करें तथा किसी ऐसी स्थिति के बारे में सोचें जहाँ आप का सीखना कार्य की जटिलता के बजाय आपके भय या शर्मिंदगी जैसी भावनात्मक अवस्था से प्रभावित हुआ हो। इससे आपको बच्चे के शिक्षण में प्यार तथा पालन-पोषण के महत्त्व को समझने में सहायता मिलेगी।

(iv) **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल तथा शिक्षा के माध्यम से आवश्यकताओं की पूर्ति**– चर्चा के उद्देश्य से हमने इन प्रत्येक आवश्यकताओं के बारे में अलग-अलग चर्चा की है। किंतु यह समझना महत्वपूर्ण है कि बच्चे की इन सभी आवश्यकताओं की एक साथ पूर्ति किया जाना उसके एक-साथ इष्टतम विकास के लिए आवश्यक है। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों होना चाहिए? ऐसा इसलिए है कि सभी क्षेत्रों में होने वाले विकास परस्पर संबंधित होते हैं, विशेष रूप से आरंभिक बाल्यावस्था के वर्षों में। दूसरे शब्दों में, एक क्षेत्र में होने वाला विकास सभी अन्य क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करता है तथा उनके विकास से प्रभावित भी होता है। बच्चा विकसित होकर एक पूर्ण व्यक्ति बनता है– विकास के किसी एक पहलू से संबंधित अभाव अन्य पहलुओं को प्रभावित करता है। अंतग्रर्थनी संयोजन, जिनका वर्णन इस अध्याय में पहले किया गया था, का निर्माण पर्याप्त पोषण प्राप्त करने, गंभीर तथा चिरकालिक रोगों से मुक्त होने तथा एक भावनात्मक रूप से सुरक्षित माहौल में शिक्षण को प्रोत्साहित करने के अनुभवों में लगे होने पर निर्भर है।

© NCERT not to be republished

प्रारंभिक वर्षों में शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी तथा सामाजिक-भावनात्मक विकास के अत्यधिक परस्पर-संबद्ध स्वरूप के कारण हम देखभाल तथा शिक्षा दोनों को एक साथ मिलाकर— ''प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल तथा शिक्षा'' (ई.सी.सी.ई.) कहते हैं। ई.सी.सी.ई. से अभिप्राय बच्चे की शारीरिक देखभाल, प्रोत्साहन तथा पालन-पोषण से है, जो बच्चे को उपलब्ध होना चाहिए। जीवन के प्रथम 6 वर्षों में शिक्षा उन विषय क्षेत्रों के अर्थ में नहीं समझी जाती जिनसे हम अपने स्कूली जीवन में परिचित थे। इसके बजाय, इस शिक्षा का अर्थ उन अनुभवों से है जो शरीर-क्रियात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, संज्ञानात्मक तथा भाषा के क्षेत्रों में विकास में बच्चे की सहायता करते हैं। हम इस अध्याय में आगे ई.सी.सी.ई. अनुभवों के स्वरूप पर चर्चा करेंगे। आइए पहले इस पर विचार करें कि बच्चे को ई.सी.सी.ई. कौन प्रदान करता है।

ई.सी.सी.ई. कौन प्रदान करता है?

देश में ई.सी.सी.ई. सरकार, निजी संस्थाओं तथा स्वैच्छिक क्षेत्र (गैर सरकारी संगठन) द्वारा प्रदान की जाती है। ये सेवाएँ शिशुगृहों (क्रैशों) तथा पूर्व विद्यालय केंद्रों द्वारा प्रदान की जाती हैं जिन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे - नर्सरी विद्यालय, किंडर गार्डन, प्ले स्कूल, आंगनवाड़ियाँ तथा बालवाड़ियाँ। अंतर केवल यह है कि शिशुगृह में जन्म से लेकर 3 वर्ष तक के बच्चों को ई.सी.सी.ई. उपलब्ध कराई जाती है जबकि पूर्व विद्यालय केंद्र 3 से 5 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

ई.सी.सी.ई. सेवाएँ क्यों प्रदान की जाएँ?

ऐसे अनेक कारण हैं जिनकी वजह से बच्चों की संवृद्धि तथा विकास के लिए इन सेवाओं की आवश्यकता होती है।

पहला, हमारे देश में सभी बच्चों को संवृद्धि का इष्टतम माहौल नहीं मिल पाता है। अनेक बच्चे गरीबी की उन परिस्थितियों में जीवन-यापन करते हैं जहाँ उनकी भोजन, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की बुनियादी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होतीं। ऐसी स्थिति में, ई.सी.सी.ई. सेवाएँ बच्चों की स्वास्थ्य तथा पोषण की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने, 0-3 वर्ष के आयु वर्ग में बच्चों को आरंभिक प्रोत्साहन देने के साथ-साथ 3-6 वर्ष के आयु वर्ग में बच्चों को पूर्व विद्यालय शिक्षा प्रदान करने में सहायता कर सकती हैं।

दूसरा, ई.सी.सी.ई. सेवाएँ प्रदान करने का एक दूसरा कारण यह है कि सभी सामाजिक-आर्थिक स्तरों की काफ़ी महिलाएँ जीविका उपार्जन के लिए घर से बाहर कार्य करती हैं। अत: कई घरों में बच्चों की देखभाल करने के लिए कोई नहीं होता। आप कह सकते हैं कि परिवार के पास अन्य विकल्प उपलब्ध हैं जैसे—

- दिन में बच्चे को किसी परिवार के किसी सदस्य या मित्र के पास छोड़ना,
- माता का बच्चे को अपने कार्यस्थल पर ले जाना,
- घर में घरेलू सेवक रख कर बच्चे को उसके पास छोड़ना,
- बच्चे को घर में बड़े बच्चे के पास छोड़ना।

© NCERT not to be republished

तथापि, इनमें से प्रत्येक विकल्प की अपनी परिसीमाएँ हैं। घरेलू सेवक रखना महंगा विकल्प है तथा निम्न और मध्यम सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवार उनकी सेवाओं के खर्च को संभवत: वहन न कर पाएँ। माता का अपने साथ अपने कार्यस्थल पर बच्चे को ले जाना तभी समुचित है जब वहाँ बच्चे के लिए शिशु देखभाल केंद्र की सुविधाएँ उपलब्ध हों। यदि शिशु देखभाल केंद्र की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, तो कार्यस्थल का माहौल बच्चे के लिए अनुचित या खतरनाक हो सकता है। अपने देखा होगा कि कई छोटे बच्चे निर्माण स्थलों पर खेलते रहते हैं जबकि उनके माता-पिता श्रमिकों के रूप में कार्य करते हैं। क्या आपके विचार में ऐसा माहौल बच्चे के लिए सुरक्षित है जहाँ प्रेरणा तथा देखभाल तो दूर की बात है बच्चे को अन्य बच्चों का साहचर्य तो प्राप्त होता है लेकिन बच्चे की सुरक्षा की कीमत पर। हमारे देश की अनेक महिलाओं के पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है कि वे अपने बच्चे को अपने साथ ले जाएँ क्योंकि बच्चों की देखभाल के लिए पर्याप्त शिशु देखभाल केंद्र नहीं हैं। उपर्युक्त प्रथम विकल्प केवल तभी संभव है जब घर में वयस्क व्यक्ति मौजूद हों। शहरों में अनेक परिवार एकल परिवार होते हैं–जहाँ दोनों माता-पिता जीविकोपार्जन के लिए घर से बाहर जाते हैं और घर में बच्चे की देखभाल करने के लिए कोई नहीं होता। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में अक्सर सभी वयस्क व्यक्तियों को जीविकोपार्जन के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है। चौथा विकल्प अर्थात् छोटे बच्चे को किसी बड़े भाई-बहन, सामान्यत: लड़की के पास छोड़ना ही ऐसा विकल्प है जिस पर निम्नतर सामाजिक-आर्थिक स्तर के अधिकांश परिवार निर्भर करते हैं। किंतु इससे बड़ा बच्चा विद्यालय जाने से वंचित रह जाता है। सर्वोच्च हित में उपलब्ध एकमात्र विकल्प यही है कि बच्चे को शिशु-देखभाल केंद्र में बाल देखभाल सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।

ई.सी.सी.ई. सेवाएँ प्रदान करने का **तीसरा** कारण यह है कि चाहे परिवार का माहौल कितना भी अच्छा क्यों न हो, उसमें बच्चे को वे पर्याप्त खेल क्रियाकलाप तथा बच्चों का साहचर्य उपलब्ध नहीं हो सकता जिसकी व्यवस्था एक पाठशाला पूर्व केंद्र कर सकता है। एक पाठशाला पूर्व केंद्र में, बच्चों को एक दूसरे के साथ अंत: क्रिया करने तथा सामूहिक क्रियाकलाप करने के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे आदान-प्रदान, सहभागिता, एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने तथा सभी के लिए सहानुभूति तथा सामंजस्य के सार्वभौमिक मूल्यों का विकास करने का अवसर प्राप्त होता है।

ई.सी.सी.ई. सेवाएँ उपलब्ध कराने का **चौथा** कारण वे लाभ हैं जो ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम, बच्चों को अल्पावधि तथा दीर्घावधि, दोनों में प्रदान करता है। अल्पावधि दृष्टिकोण में, एक अच्छा ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम बच्चों को अकादमिक (शैक्षणिक) तथा सामाजिक तैयारी, दोनों के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालय के लिए तैयार करने में सहायता करता है। क्या आप बता सकते हैं कि इन शब्दों का क्या अर्थ है? अकादमिक तैयारी का अर्थ यह नहीं है कि हम ई.सी.सी.ई. केंद्र में बच्चे को पढ़ना और लिखना सिखाते हैं – इसका अर्थ यह है कि हम विद्यालय जाने वाले बच्चे के लिए आवश्यक कौशलों का विकास करके औपचारिक रूप से विद्यालय जाने के लिए बच्चे को तैयार करते हैं। इसके कुछ उदाहरण है मिल-बांटना, आदान-प्रदान करना, समय सारणी का अनुसरण करना तथा एक नये माहौल में ढालना। सामाजिक तैयारी का अर्थ है कि पाठशाला पूर्व विद्यालय के अनुभव बच्चे को अन्य बच्चों तथा बड़े लोगों के साथ संबंध बनाना सीखने में उसकी सहायता करते हैं जिससे उसको प्राथमिक विद्यालय में समायोजित होने में सहायता मिलेगी। यह देखा गया है कि जिन बच्चों ने ई.सी.सी.ई कार्यक्रम में भाग लिया है उनके प्राथमिक विद्यालय को

© NCERT not to be republished

बीच में छोड़ने की संभावना कम होती है, उनमें किशोर अपराधों और नशीली दवाओं के व्यसन के कम उदाहरण नज़र आते हैं और वे परिवार की आय के साथ-साथ राष्ट्र की आर्थिक पूंजी में भी योगदान देते हैं। इस प्रकार, ई.सी.सी.ई. सेवाएँ प्रदान करने के इस चौथे कारण को बच्चों में निवेश हेतु आर्थिक युक्ति भी कहा जा सकता है।

आरंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में निवेश करने का **पाँचवाँ** तथा संभवत: सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण यह है कि प्रत्येक मनुष्य को एक स्वस्थ तथा समृद्धकारी माहौल में बढ़ने तथा रहने का अधिकार है ताकि वह अपनी पूर्ण सामर्थ्य को हासिल कर सके। इसे मानव विकास के प्रति अधिकार संबंधी दृष्टिकोण कहा जाता है।

क्रियाकलाप 3

अपने पड़ोस में (या अपने परिवार में) पाँच परिवारों का सर्वेक्षण करें जिनमें माता-पिता दोनों कामकाजी हैं तथा उनका कम-से-कम एक बच्चा 6 वर्ष से कम आयु का भी है। पता लगाएँ कि बाल देखभाल के लिए परिवार द्वारा क्या व्यवस्थाएँ की गई हैं?

ई.सी.सी.ई. का स्वरूप

जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, ई.सी.सी.ई. में स्वास्थ्य, पोषण, प्रेरणा तथा पाठशाला पूर्व शिक्षा के योगदान शामिल हैं ताकि बच्चे की संपूर्ण तथा सर्वांगीण संवृद्धि तथा विकास हो सके। स्वास्थ्य संबंधी योगदानों में स्वास्थ्य जाँच, प्रतिरक्षण, परामर्श/संदर्भ सेवाएँ तथा बीमारियों का उपचार शामिल है। पोषण संबंधी योगदानों में मध्याह्न भोजन तथा विटामिन के रूप में पूरक पोषण प्रदान करना शामिल है। प्रेरणा तथा पाठशाला पूर्व शिक्षा योगदानों का अर्थ है विकासात्मक रूप से उपयुक्त सार्थक अनुभव प्रदान कराना जो विभिन्न क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देते हों। ये अनुभव बच्चे को बाल सुलभ क्रियाकलापों तथा खेल के माध्यम से उपलब्ध कराए जाने चाहिए, न कि औपचारिक शिक्षा के माध्यम से। बच्चे खेल-खेल में सीखते हैं तथा ऐसे क्रियाकलापों में संलग्न रहते हैं जो उनकी आयु तथा विकासात्मक स्तर के अनुरूप होते हैं।

बच्चे संकीर्ण रूप से परिभाषित स्कूली विषयों में बंधकर नहीं सीख सकते—बल्कि शिक्षण तथा विकास परस्पर संबद्ध हैं तथा विकास के एक पहलू को प्रेरित करने वाली अधिकांश खेल क्रियाएँ या गतिविधियाँ अन्य आयामों को भी प्रभावित करती हैं। आइए एक उदाहरण के माध्यम से इसे समझें। बाल गीत या कविताएँ गाना एक आम क्रियाकलाप है जो अधिकांश माता-पिता बच्चे के साथ उस समय से करते हैं जब वह कुछ माह का ही होता है। बाल कविताएँ पाठशाला पूर्व केंद्रों में भी पाठ्यचर्या का एक अभिन्न भाग होती हैं। यह क्रियाकलाप बच्चे की भाषा के विकास में भी सहायक होते हैं क्योंकि वह स्वयं बाल कविता गाते हैं तथा अन्य लोगों को उन्हें बोलते हुए सुनते हैं। यह बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में सहायक होती है क्योंकि बच्चे के माता-पिता या पाठशाला पूर्व अध्यापक बातचीत में उन वस्तुओं, घटनाओं या संकल्पनाओं की बातें करते हैं जिनका वर्णन बाल गीतों में किया जाता है। इससे सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में सहायता मिलती है क्योंकि वयस्क व्यक्ति तुकांत गीत गाने के दौरान आनंददायक तरीके से बच्चे के साथ

© NCERT not to be republished

घनिष्ठता से अंत: क्रिया करता है तथा बच्चा और वयस्क व्यक्ति दोनों को एक साथ मिलकर क्रियाकलाप करने से संतुष्टि एवं आनंद का अनुभव होता है। यदि बाल गीत, क्रियाएँ करते हुए गाया जाता है तो इससे बच्चे के शारीरिक तथा क्रियात्मक विकास में भी योगदान मिलता है। प्रथम तीन वर्षों में प्रेरणा क्रियाकलाप तथा 3-6 वर्षों की आयु में पाठशाला पूर्व शिक्षा खेल, कला, लय, शारीरिक चेष्टा और गतिविधि तथा बच्चे की सक्रिय सहभागिता पर आधारित होने चाहिए।

13.3 मध्य बाल्यावस्था वर्षों के दौरान देखभाल तथा शिक्षा

मध्य बाल्यावस्था वह अवधि है जिसमें बच्चा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करता है। प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य बच्चे में बुनियादी साक्षरता तथा अंकीय (गणितीय) कौशलों का विकास करना है क्योंकि यह माध्यमिक अवस्था की शिक्षा के आधार के रूप में कार्य करते हैं। स्वतंत्रता के छ: दशकों के बाद भी, देश प्राथमिक शिक्षा में सार्वभौमिक नामांकन के लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाया है। कक्षा 1 से 5 में लड़कों का नामांकन 53.3 प्रतिशत है तथा लड़कियों का 46.7 प्रतिशत है जो यह दर्शाता है कि प्राथमिक कक्षाओं में लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या अधिक है। प्रत्येक 100 लड़कों की तुलना में केवल 87 लड़कियाँ स्कूल जाती हैं। बीच में ही विद्यालय छोड़ देने वाले बच्चों की संख्या का प्रतिशत 25.47 है। (स्रोत – सेलेक्टेड एजुकेशनल स्टेटिस्टिक्स, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 2005-2006) प्राथमिक विद्यालय में नामांकन कराने के पश्चात् भी अनेक बच्चे प्राथमिक विद्यालय के पाँच वर्ष भी पूरा नहीं करते और पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। इस प्रकार, नामांकन कराने वाले सभी बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं करते हैं। अब सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए एक अभियान विधि अपनाई है जिसके माध्यम से यह प्राथमिक विद्यालय में बच्चों का नामांकन करवाने तथा उन्हें विद्यालय में पढ़ाई जारी रखने के लिए समायोजित तथा सतत् प्रयास कर रही है। आपने दूरदर्शन पर तथा समाचारपत्रों में इस अभियान के विज्ञापन अवश्य देखे होंगे। क्या आप इस अभियान का नाम बता सकते हैं? जी हाँ, यह 'सर्व शिक्षा अभियान' है। बालिकाओं को विद्यालय में दाखिल करने के लिए विशेष प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं तथा प्रयास किए जा रहे है क्योंकि अक्सर उन्हें ही घर का काम करने अथवा छोटे बच्चों की देखभाल के लिए घर में रहना पड़ता है।

क्या आप कुछ ऐसे कारणों के बारे में सोच सकते हैं जिनके कारण हम प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण नहीं कर पाए हैं? अपने उत्तर को बॉक्स में लिखें तथा आगे की चर्चा के साथ उसकी तुलना करें –

उत्तर देने के लिए बॉक्स

© NCERT not to be republished

बच्चों की प्राथमिक शिक्षा में होने वाली कठिनाइयाँ

भारत में शुरूआत से ही छोटे बच्चों की स्कूली शिक्षा में व्यापक अंतर पाए जाते हैं। अनेक कारणों से बड़ी संख्या में बच्चे विद्यालय में शिक्षा पाने में असमर्थ होते हैं। जिसका वर्णन किया गया है।

पहला, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले अनेक परिवारों में सभी व्यक्तियों को जीविकोपार्जन में सहायता करने की आवश्यकता होती है। अत: जैसे ही बच्चे समर्थ होते हैं, उन्हें परिवार के आय सृजन के क्रियाकलाप में लगा दिया जाता है या वे घर के कार्यों में सहायता करते हैं।

दूसरा, जब बच्चे विद्यालय में नामांकित होते भी हैं तो उन्हें फसल कटाई के समय या बुआई की अवधि के दौरान स्कूल से निकाल लिया जाता है क्योंकि उनकी सेवाओं की घर में आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए होता है कि विद्यालय की ग्रीष्मकालीन/शीतकालीन छुट्टियाँ कृषि के मौसमों के साथ मेल नहीं खातीं।

तीसरे, विद्यालय में पाठ्यचर्या बच्चे की वास्तविकता से काफ़ी अलग होती है और इसलिए बच्चे को वह सार्थक प्रतीत नहीं होती। कई बार, पढ़ाए जाने वाले पाठ बच्चे के अनुभवों के साथ मेल नहीं खाते/संबंधित नहीं होते तथा वे विविध भौगोलिक तथा सांस्कृतिक प्रचलनों में रहने वाले समुदायों के मुद्दों तथा चिंताओं को प्रतिबिंबित नहीं करते। अपनी वर्तमान अथवा भावी जिंदगी के लिए शिक्षा को सुसंगत न पाने के कारण बच्चे विद्यालय बीच में छोड़ देते हैं या उन्हें परिवार द्वारा विद्यालय से निकाल लिया जाता है।

चौथे, विद्यालयों में खराब अवसंरचना, उदाहरणार्थ अपर्याप्त शौचालय सुविधाएँ, तथा दूरवर्ती स्थल भी स्कूलों की उपस्थिति में बाधा डालते हैं।

पाँचवें, अनेक अक्षम बच्चे विभिन्न कारणों से विद्यालय नहीं जा पाते। इनमें से एक मुख्य कारण यह है कि हमारे देश के विद्यालयों में अक्षम बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यवस्था नहीं है तथा इसलिए वे उन्हें प्रवेश देने में हिचकते हैं। यह अक्षम बच्चों को अपनी आयु के अन्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने से रोकता है। अक्षम बच्चों के लिए विशेष विद्यालय तो हैं किंतु आवश्यकता की तुलना में इनकी संख्या बहुत कम है तथा ये अधिकांशत: शहरी तथा अर्धशहरी क्षेत्रों में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, यह अधिकाधिक महसूस किया जा रहा है कि अक्षम बच्चों को पृथक् विद्यालयों में शिक्षा नहीं प्राप्त करनी चाहिए। इसके बजाय सभी विद्यालयों को सभी बच्चों को नामांकित करना चाहिए चाहे वे अक्षम हों या न हों—दूसरे शब्दों में, **शिक्षा प्रणाली का स्वरूप समावेशी होना** चाहिए। किंतु इस स्वप्न को वास्तविकता बनाने के लिए हमें अध्यापकों को प्रशिक्षित करना होगा तथा विभिन्न स्तरों पर प्रणाली को सुसज्जित करना होगा ताकि सभी बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। यह सब धीमी गति से हो रहा है तथा इसमें समय लगेगा।

प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप

जब हम ई.सी.सी.ई. पर चर्चा कर रहे थे, हमने बताया था कि बच्चे निष्क्रिय जीव नहीं हैं जो वे दी गई जानकारी को आत्मसात् कर लें बल्कि जब उनका विभिन्न लोगों तथा घटनाओं के साथ

© NCERT not to be republished

सामना होता है तो वे अपने लिए ज्ञान का वस्तुतः निर्माण करते हैं। अतः प्राथमिक वर्षों में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे ऐसे क्रियाकलापों में लगे जिनके माध्यम से वे अपनी समझ स्वयं निर्मित कर सकें। हमारे देश के विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा भाषायी संदर्भों के अनुरूप होने के लिए शिक्षा का पर्याप्त लचीला होना ज़रूरी है। आरंभिक प्राथमिक कक्षाओं– कक्षा 1 तथा 2 – में शिक्षा शास्त्र तथा पाठ्यचर्या संपादन, क्रियाकलाप आधारित तथा अनुभवजन्य होना चाहिए ताकि पाठशाला पूर्व वर्षों में अध्यापन की विधि तथा दृष्टिकोण के साथ निरंतरता बनी रहे। इससे बच्चे को प्राथमिक विद्यालय के नए तथा अपरिचित माहौल में समायोजन करने में सहायता मिलेगी।

जो भी हो, ई.सी.सी.ई. के मामले की भाँति ही इसमें भी 'जो होना चाहिए' तथा 'जो हो रहा है' के बीच काफ़ी अंतराल है।

विगत कुछ दशकों में, शिक्षा में इन अंतरालों को दूर करने के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं। शिक्षाविदों द्वारा अनेक नवीन तथा नवोन्मेषी पहलें की गई हैं। दूरगामी प्रभाव वाली एक नवीनतम पहल वर्ष 2005 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा विकसित किया गया राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा है। यद्यपि एन.सी.ई.आर.टी. यह प्रक्रिया प्रत्येक पाँच वर्ष में संचालित करती है, इस विशिष्ट प्रक्रिया में नवीनता यह है कि इसमें स्पष्ट रूप से उन सैद्धांतिक आधारों को निर्धारित किया गया है जिन पर शिक्षा आदर्शतः आधारित होनी चाहिए। इसमें पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं कि वे पाठ्य सामग्री को इस तरीके से प्रस्तुत करें जिससे शिक्षार्थियों को पुस्तकों में निहित सूचना को निष्क्रिय रूप से ग्रहण करने के बजाय ज्ञान का सक्रिय सृजनकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहन मिले।

अगले अध्याय में हम शिक्षा के गंभीर विषय से हट कर बच्चों के लिए परिधान जैसे आकर्षक क्षेत्रों के बारे में बात करेंगे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जो हम पहनते हैं उस अंतिम रूप से पहले वह कपड़ा कितनी प्रक्रियाओं से गुज़रता है। 'हमारे परिधान' में इस बारे में अवश्य पढ़ें।

प्रमुख शब्द एवं उनके अर्थ

निर्णायक/संवेदी अवधियाँ – ऐसी समयावधि जिसके दौरान किसी विशिष्ट क्षेत्र में विकास अनुकूल तथा प्रतिकूल अनुभवों के प्रति अतिरिक्त संवेदनशील होता है।

विश्वास – यह भावना कि आस-पास का माहौल एक सुरक्षित स्थान है जहाँ व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाएगी। यह भावना तब विकसित होती है जब शिशु को जीवन के प्रथम वर्ष में सतत् देखभाल तथा ममता प्राप्त होती है। बच्चे के आस-पास वस्तुओं का सक्रिय अन्वेषण तथा घटनाओं में उसकी सक्रिय सहभागिता से बच्चे को संसार की समझ आने लगती है तथा वह अपनी बुद्धि के अनुसार अपनी समझ पैदा करता है।

उद्दीपन (प्रेरण) – बच्चे को विविध अनुभव उपलब्ध कराना जो उसके लिए सार्थक हों, तथा उसकी परिपक्वता की स्थिति के अनुरूप हों। इन अनुभवों में बच्चे के द्वारा वस्तुओं का सक्रिय अन्वेषण किया जाना तथा आस-पास की घटनाओं में उसकी सक्रिय सहभागिता शामिल है। इससे बच्चे को संसार की समझ आने लगती है, वह अपने आस-पास की वस्तुओं और लोगों के बारे में सीखता है तथा अपनी समझ पैदा करता है।

© NCERT not to be republished

ई.सी.सी.ई. – शारीरिक देखभाल, उद्दीपन तथा पालन-पोषण के संबंध में संपूर्ण योगदान जो सर्वतोमुखी विकास सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बच्चे को प्रदान किए जाने चाहिए।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे – वे बच्चे जिनमें मानसिक मंदता, दृष्टि या श्रव्य दोष या अपने अंगों का प्रयोग करने में कठिनाई, इत्यादि जैसी अक्षमताएँ होती हैं। अनेक रूपों में वे अन्य सभी बच्चों के समान ही होते हैं।

क्रियाविधि आधारित तथा अनुभवजन्य पाठ्यचर्या – ऐसी पाठ्यचर्या जहाँ बच्चा ऐसे क्रियाकलापों में संलग्न होता है जो बच्चे को अन्वेषण करने, पता लगाने तथा अपने आप सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

■ अंत में कुछ प्रश्न

1. शैशवावस्था तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था को किसी व्यक्ति के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा निर्णायक अवधियाँ क्यों माना जाता है?
2. विकास में 'संवेदी'/'निर्णायक' अवधियों से क्या अभिप्राय है?
3. हमें अपने देश में ई.सी.सी.ई. सेवाएँ प्रदान करने की आवश्यकता क्यों है?
4. बच्चे की मूल आवश्यकताओं का उदाहरण सहित वर्णन करें। इन मूल आवश्यकताओं को पूरा करना क्यों आवश्यक है?
5. ''प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल तथा शिक्षा'' शब्दों का अर्थ स्पष्ट करें। ई.सी.सी.ई. सेवाओं के माध्यम से बच्चे की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार होती है?
6. हमारे देश में प्रारंभिक शिक्षा को सार्वभौमिक न कर पाने के क्या कारण हैं?
7. सर्व शिक्षा अभियान क्या है?

■ प्रायोगिक कार्य 13

शिक्षा और देखभाल – अ

थीम – आस-पड़ोस के दो बच्चों का अवलोकन करना तथा उनके क्रियाकलापों तथा व्यवहार के संबंध में सूचना देना

अभ्यास – 1. जन्म से 10 वर्ष तक की आयु समूह के दो बच्चों का एक-एक घण्टे के लिए अवलोकन करना
2. उनके क्रियाकलापों (गतिविधियों) तथा व्यवहार को नोट करना
3. रिपोर्ट लिखना

प्रायोगिक कार्य का उद्देश्य – हम अपने आस-पास बच्चों को देखते हैं किंतु हम बहुत कम यह सोचने का प्रयास करते हैं कि विभिन्न आयु समूहों के बच्चे किस प्रकार एक दूसरे से अलग हैं तथा उनमें क्या आम विशेषताएँ हैं। हम उनके नज़रिये से घटनाओं तथा स्थितियों का अवलोकन करने का प्रयास शायद ही कभी करते हैं। यह प्रायोगिक कार्य आप को कुछ समय के लिए बच्चों के संसार में प्रवेश करने में सहायता करेगा तथा आप यह जानने में समर्थ होंगे कि उनकी रुचियाँ और उनके सोचने के तरीके क्या हैं तथा विभिन्न स्थितियों में उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है।

© NCERT not to be republished

प्रायोगिक कार्य करना

1. अपने पड़ोस के दो ऐसे बच्चों का चयन कीजिए जिनका अवलोकन आप सरलता से कर सकते हैं तथा जो आपकी उपस्थिति में हिचकेंगे या शरमाएँगे नहीं।
2. दिन का कोई ऐसा समय निश्चित कर लें जब आप उनके घर में या घर से बाहर उस समय उनका अवलोकन सुविधापूर्वक कर सकें जब वे किन्हीं क्रियाकलापों में व्यस्त हों।
3. अपने पास एक नोट पैड रखें तथा प्रत्येक बच्चे के क्रियाकलापों का अलग-अलग एक घण्टे के लिए अवलोकन करें। अपने नोट पैड में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें जिन्हें आप बाद में विस्तार से वर्णित करेंगे।
4. प्रत्येक बच्चे के क्रियाकलापों को रिकॉर्ड करने के लिए निम्न प्रारूप (फॉरमेट) का प्रयोग करें –

बच्चे का नाम
आयु
लड़का/लड़की

क्रियाकलाप

क्रियाकलाप का विषय – उदाहरणार्थ खाना / खेलना
क्रियाकलाप की अवधि – मिनटों में
क्रियाकलाप में शामिल लोग – वे सभी लोग जो क्रियाकलाप में भाग ले रहे थे
क्रियाकलाप का विवरण – क्रियाकलाप के दौरान बच्चा तथा उसके साथ के अन्य लोगों ने क्या किया
क्रियाकलाप के दौरान बच्चे का व्यवहार –

एक घण्टे की अवधि में प्रत्येक बच्चे द्वारा किए गए प्रत्येक क्रियाकलाप को उक्त प्रारूप (फॉरमेट) में रिकॉर्ड करें।

5. दोनों बच्चों के क्रियाकलापों के स्वरूप तथा उनके व्यवहारों की तुलना करें। निम्नलिखित बातों के आधार पर इनका विश्लेषण करें –
   – क्या किसी क्रियाकलाप में संलग्नता अवधि में कोई अंतर था?
   – क्या दोनों बच्चों के क्रियाकलापों के स्वरूपों में भिन्नता थी?
   – क्या उन्होंने एक ही क्रियाकलाप की अनुक्रिया में भिन्न व्यवहारों का प्रदर्शन किया?
   – क्या ये भिन्नताएँ तथा समानताएँ बच्चों की आयु तथा लिंग के कारण थीं?

■ प्रायोगिक कार्य 14

शिक्षा और देखभाल – ब

थीम – भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्रारंभिक वर्षों में बाल देखभाल पद्धतियों के बारे में तथा इसमें लिंग समानताओं तथा भिन्नताओं के बारे में सूचना एकत्रित करना।

© NCERT not to be republished

अभ्यास

1. भारत के तीन क्षेत्रों से बाल देखभाल पद्धतियों के बारे में सूचना एकत्रित करना
2. यह विश्लेषण करना कि क्या विभिन्न क्षेत्रों में बाल देखभाल पद्धतियों में भिन्नताएँ हैं।
3. यह विश्लेषण करना कि क्या बच्चे के लिंग (लड़का/लड़की) के आधार पर बाल देखभाल पद्धतियों में कोई अंतर पाया जाता है।

प्रायोगिक कार्य का उद्देश्य – हालांकि सभी परिवार चाहते हैं कि उनके यहाँ बच्चे हों, यह देखा गया है कि हमारे देश के अनेक भागों में, लड़की की तुलना में लड़के को वरीयता दी जाती है। इसके परिणामस्वरूप बाल देखभाल पद्धतियों में अंतर आ जाता है जिससे बालिका के स्वास्थ्य, पोषण तथा शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बाल देखभाल पद्धतियों की जानकारी आपको भेदभावपूर्ण पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करने तथा यथासंभव सीमा तक उनकी रोकथाम करने में सहायता करेगी।

प्रायोगिक कार्य करना

1. देश के विभिन्न क्षेत्रों से ऐसे तीन परिवारों का चयन करें कि जिनके परिवार में कम से कम एक बालिका तथा एक बालक हो। ये परिवार अपने समुदाय में बाल देखभाल पद्धतियों के बारे में तथा अपने बच्चों के पालन-पोषण में वे जिन पद्धतियों का अनुसरण करते हैं उनके बारे में आप को जानकारी प्रदान करने के लिए आपके साथ समय बिताने के इच्छुक होने चाहिए।
2. प्रत्येक परिवार के साथ दो-तीन घंटे व्यतीत करें तथा उनसे उन विशिष्ट स्वास्थ्य, पोषण तथा शैक्षिक पद्धतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें जो उन्होंने अपने बच्चों के संबंध में अपनाई है। आप संभवतः माता से या दादी से मिलेंगे। नीचे कुछ प्रश्न दिए गए है जो आप पूछ सकते हैं –
   - आपके समुदाय में बच्चे के जन्म का समारोह कैसे मनाया जाता है? क्या लड़के तथा लड़कियों के जन्म समारोहों में भिन्नता होती है?
   - नवजात शिशु को आहार (दूध) देने से संबंधित पद्धतियाँ क्या हैं?
   - बच्चे के जन्म के प्रथम वर्ष के दौरान विभिन्न महीनों में कौन से समारोह आयोजित किए जाते हैं? क्या लड़कों के समारोह तथा लड़कियों के लिए समारोह अलग-अलग होते हैं?
   - प्रथम वर्ष में नवजात शिशु के बड़े होने के साथ-साथ, उसके खाने तथा आहार देने के तरीकों में क्या बदलाव आता है। क्या लड़कियों तथा लड़कों को दिए जाने वाले भोजन में भिन्नता होती है?
   - जब बच्चा बीमार पड़ता है तो आप क्या करते हैं – घरेलू उपचार करते हैं, डॉक्टर के पास जाते हैं, स्थानीय नीम-हकीम के पास जाते हैं?
   - बच्चे के लिए किस प्रकार के खिलौने खरीदे जाते हैं?
   - बच्चे को विद्यालय किस उम्र में भेजा जाता है?

   ये कुछ उदाहरण हैं। आप और प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

© NCERT not to be republished

3. अपने निष्कर्षों को निम्न प्रारूप (फॉरमेट) में रिकॉर्ड करें –

बाल देखभाल पद्धतियाँ	बालिका	बालक
स्वास्थ्य		
पोषण		
शिक्षा		

विश्लेषण – इसमें यह बताना होगा कि आपने बालिका तथा बालक के संबंध में बाल देखभाल पद्धतियों में क्या समानताएँ तथा भिन्नताएँ देखीं?

© NCERT not to be republished